Findings

अधिसूचना संख्या	:	540/2023
अधिसूचना तिथि	:	23-06-2023
शोधार्थी	:	नवीन चन्द्र
शोध निर्देशक	:	डॉ. अनिल कुमार
विभाग	:	हिन्दी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया
शोध विषय	:	गढ़वाली लोकसाहित्य का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन
बीज शब्द	:	गढ़वाल, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकविश्वास, प्रकीर्ण साहित्य

शोधार्थी की स्थापनाएँ

1. गढ़वाली लोकसाहित्य किसी एक जाति विशेष की बोली का लोकसाहित्य नहीं है बल्कि वहाँ निवास करने वाली अनेक आदिम जातियों एवं जनजातियों का सामूहिक लोकसाहित्य है।
2. गढ़वाली बोली हिन्दी भाषा की अन्य बोलियों के समान एक स्वतंत्र बोली नहीं है बल्कि यह अनेक उप-बोलियों के एक समूह का नाम है। इनमें से श्रीनगरिया बोली गढ़वाली का मानक रूप है।
3. गढ़वाली की उप-बोलियों में से जौनसारी, रवाँल्टी एवं बंगाणी अत्यंत समृद्ध हैं जिनमें लोकसाहित्य की उपलब्धता को देखते हुए उन पर स्वतंत्र अध्ययन किया जा सकता है।
4. क्षेत्रीय बोली होने के बावजूद गढ़वाली में विपुल एवं समृद्ध बहुजातीय लोकसाहित्य विद्यमान है गढ़वाली लोकसाहित्य में लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं आदि का विस्तृत भंडार है।
5. गढ़वाली बोली में शब्दों का अथाह भण्डार है जिसे संग्रह करने की आवश्यकता है अन्यथा कुछ शब्दों के विलुप्त होने की आशंका है। शब्द-सामर्थ्य एवं अर्थ-गौरव के दृष्टिकोण से गढ़वाली बोली भाषा कहलाने की अधिकारी है।
6. वर्तमान समय में पलायन के कारण गढ़वाली लोकगीतों एवं लोकगाथाओं के गायन का चलन कुछ कम हुआ है, जिसके कारण नयी पीढ़ी लोकसाहित्य से विमुख होती जा रही है।
7. डिजिटल माध्यमों ने लोकसाहित्य के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। लोकगीत, लोककथा व लोकगाथाओं को यू-ट्यूब व अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा भविष्य के लिए संरक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

1. लोकसाहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक स्वयं करता है। इसमें मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ, आचार-विचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, रूढ़ियाँ-प्रथाएँ, धार्मिक विश्वास, राग-द्वेष, प्रेम-विरह, वात्सल्य आदि सभी भावनाएँ सम्मिलित होती हैं। लोक जिसे मौखिक रूप में अभिव्यक्त करता है, वही लोकसाहित्य कहलाता है।

लोकसाहित्य की सृष्टि में किसी एक व्यक्ति विशेष की नहीं बल्कि सम्पूर्ण लोक की भूमिका होती है और इस प्रकार वह व्यक्ति विशेष की न होकर सम्पूर्ण लोक की धरोहर, संपत्ति व थाती बन जाता है।

2. लोकसाहित्य को लोकजीवन की अभिव्यक्ति का जीता-जागता, अनगढ़ एवं प्राचीनतम माध्यम माना जा सकता है। इसका संबंध लोकजीवन से होता है, यही कारण है कि लोकसाहित्य को लोक के ह्रदय का उदगार माना जाता है। साधारण जन जो कुछ सोचता है, अनुभव करता है, उसे वह अपनी बोली-भाषा में अभिव्यक्त करता है, वही लोकसाहित्य है।

3. लोकगीत, लोकसाहित्य का प्रारंभिक और सर्वाधिक प्रचलित रूप हैं, इन्हें लोक-संस्कृति के मुँह बोलते चित्र कहा जा सकता है। लोकजीवन में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक के विभिन्न अवसरों पर लोकगीत गाये जाते हैं। अन्य गीतों की तुलना में गढ़वाल में माँगल गीत, थड्या गीत, चौंफला गीत, खुदेड़ गीत (मायके की याद के गीत), ऋतु आधारित गीत (चौमासा गीत, बारामासा गीत आदि), एवं पर्व-त्योहारों पर आधारित गीत (जैसे-फूलदेई गीत, होली गीत आदि) का चलन अधिक है।

4. गढ़वाल लोक-कथाओं की उर्वर भूमि है यहाँ के गाँवों में सैकड़ों लोक-कथाएँ विद्यमान रही हैं। ये सभी कथाएँ मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँची हैं। लोकगीतों की भाँति लोककथाएँ भी वर्तमान समाज की अमूल्य धरोहर हैं। गढ़वाल से लगातार हो रहे पलायन के कारण लोकगीत गाने एवं लोककथाओं को सुनने-सुनाने का चलन कुछ कम हुआ है जिसके कारण वर्तमाना पीढ़ी इनसे विमुख होती जा रही है।

5. लोकगाथा लोकसाहित्य का वह पद्यात्मक रूप है जो श्रव्य परंपरा के अंतर्गत उच्च स्वर में गाकर सुनाया जाता है। लोकगाथाओं का निर्माण प्राय: किसी घटना के कारण होता है और इस प्रकार उनमें स्थानीय वातावरण एवं सांस्कृतिक स्थानीयता का समावेश हो जाता है। ये वास्तव में ऐसे रोचक गीत होते हैं जिनमें इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय रहता है और जो कुछ अवसर विशेष पर गाये जाते हैं। लोकगीतों की तरह ही लोकगाथाओं के रचयिता भी अज्ञात होते हैं। संगीत की अनिवार्यता के कारण लोकगाथाओं में जीवंतता होती है। लोकगीतों एवं लोककथाओं की तुलना में लोकगाथाएँ कुछ विशेष अवसरों (देवी-देवताओं के पूजन, युद्ध समापन, मंडाण आदि) तक ही सीमित होती हैं और उन्हीं विशेष अवसरों पर गायी जाती हैं। कदाचित इनकी लम्बी कथावस्तु के कारण सामान्य लोगों के लिए इनको याद रख पाना भी संभव नहीं होता है।

6. गढ़वाली लोकसाहित्य की विविध विधाओं (लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोक सुभाषित) आदि में स्त्री-पुरुषों की सामूहिक भूमिका होती है। लोकगीतों, लोककथाओं एवं लोकनृत्यों में स्त्रियाँ अधिक शामिल होती हैं और लोकगाथाओं एवं लोकनाट्यों में पुरुषों की भूमिका अधिक होती है। वर्तमान समय में अनेक लोकगीतों, लोककथाओं एवं लोकगाथाओं को यू-ट्यूब एवं अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा भविष्य के लिए संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

7. गढ़वाली बोली में शब्दों का अथाह भण्डार है जिसे संग्रह करने की अत्यंत आवश्यकता है अन्यथा यह विलुप्त हो सकता है। बोली और भाषा में शब्दों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया से बोली और भाषा दोनों समृद्ध होते हैं एवं दोनों का विकास होता है। इसीलिए हिन्दी क्षेत्र की सभी बोलियों एवं उप-बोलियों का संकलन अत्यंत आवश्यक है।